Urbanization and Environment

Issues & Challenges

शहरीकरण एवं पर्यावरण

मुद्दें एवं चुनौतियाँ

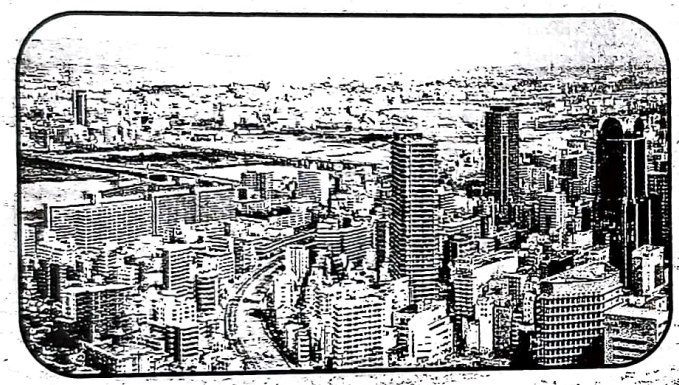
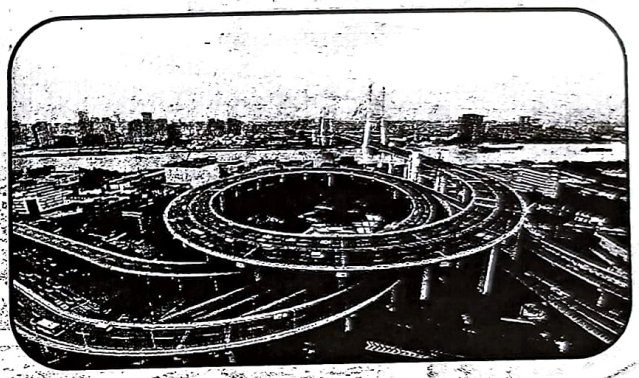
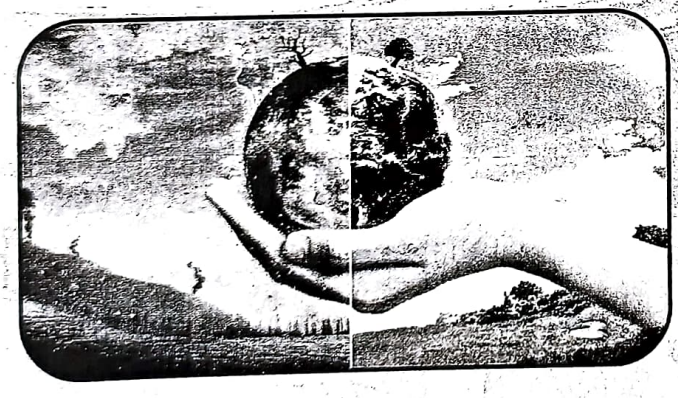

-: Editors :-

Dr. S.K. Barbar Dr. Lalit Singh Jhala Dr. Kirti Maheshwari

Copyright ©

No part of the material protected by this copyright notice may be reproduced or utilised in any form or by any means, electronic or mechanical including photocopying, recording or by any information storage and retrieval system, without prior written permission from the editors'.

The authors of the papers are alone responsible for technical contents of the papers and references therein and editors are not responsible for any copyright violation.

ISBN : 978-81-7906-634-8

Edition : 2017

Price : 1295.00

Published by

HIMANSHU Publications

HIMANSHU PUBLICATIONS

464, Sector 11, Hiran Magri, Udaipur - 1 (Raj.) INDIA
4379/4-B, Prakash House, Ansari Road, Daryaganj, New Delhi - 2
e-mail : *himanshupublications@gmail.com;* web: *www.himanshupublications.com*

164

59. विश्व की प्राचीन सभ्यताओं में पर्यावरणीय चिन्तन — 229
राजश्री सेठी

169

60. पर्यटन व्यवसाय का पर्यावरणीय प्रभाव — 233
अनिता राठौड़

174

61. पदमावत में प्रकृति चित्रण के विविध रूप — 236
नीतू परिहार, हुकमसिंह चम्पावत

178

62. पर्यावरण शिक्षा : एक यथार्थ — 240
मनोज राजगुरु

182

63. पर्यावरण का वैश्विक परिदृश्य एवं भारतीय संस्कृति — 246
भंवर सिंह राठौड़, विरेन्द्र सिंह गौड

186

64. वेद और पर्यावरण संरक्षण — 249
महेन्द्र पुरोहित

190

65. प्राचीन भारतीय संस्कृति में पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्द्धन — 252
मनोज दाधीच

195

66. पर्यावरण प्रदूषण और मानव स्वास्थ्य — 255
श्वेता व्यास

198

67. समकालीन कविता में पर्यावरणीय चेतना — 260
निर्मला राव

204

68. जलवायु परिवर्तन वैश्विक राजनैतिक परिप्रेक्ष्य में — 263
दीपक सिंह

208

69. कृषि यंत्रीकरण के फलस्वरूप सृजित नए अवसर (झाबुआ जिले के बामनिया क्षेत्र के मौसमी स्थानान्तरण का अध्ययन) — 266
मेकु सिंह निगवाल

गोलिक 212

70. पर्यावरण अध्ययन के विविध आयाम — 267
धीरज पालीवाल

216

220

224

पदमावत में प्रकृति चित्रण के विविध रूप

डॉ नीतू परिहार[1] एवं डॉ हुकमसिंह चम्पावत[2]*

[1]सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर
[2]व्याख्याता, हिन्दी विभाग श्री रतनलाल कवरलाल पाटनी कन्या महाविद्यालय, किशनगढ अजमेर
*Corresponding Author

भारतीय साहित्य साधना के साधकों ने अपने काव्य में प्रकृति के विविध मनोरम रूपों का चित्रण स्वतंत्र व स्वच्छंद रूप में किया है। आदि अनादि काल से गतिमान प्रकृति परम्परा को आगे बढाते हुए मध्यकाल के कवि जायसी ने अपने महाकाव्य 'पद्मावत' में प्रकृति के साथ मानव मन से तादात्म्य स्थापित करते हुए प्रकृति–चित्रण को प्रस्फुटित किया है। मानवमन जब प्रसन्नचित होता है तो प्रकृति भी उससे तादात्म्य स्थापित करते हुए हंसते–खेलते दर्शायमान होती है वहीं यदि मनुष्य जीवन मे कभी दुखों के पहाड़ टूटते हैं तो प्रकृति भी मानव मन के साथ आंसू बहा रही होती है। ऐसा ही जीवंत चित्रण जायसी के काव्य में विशेष रूप से दिखाई देता है।

निर्गुण काव्य धारा के सूफी कवियों में जायसी का नाम सर्वथा श्रेष्ठतम कवियो में लिया जाता है। उन्होंने अपने साहित्य व काव्य संसार में ईश्वर की कल्पना प्रेम और सौन्दर्य के रूप में की है। पद्मावत में श्रृंगार व वियोग का प्रकृति के साथ अनुपम बेजोड़ गठबन्धन है। राजा रत्नसेन व रानी पद्मावती से जुड़ाव रखने वाली इस ऐतिहासिक घटना में पद्मावती का संयोग व नागमति का वियोग एक ऐसा अप्रतिम उदाहरण है जिसमें संसार की समस्त सांसारिक चेष्टाएँ दिखाई देती है। संसार की इन्हीं चेष्टाओं में प्रकृति अपने विविध रूप बनाती है। प्रकृति के इन्हीं विविध रूपों को प्रदर्शित करते 'पद्मावत' के सिंहलद्वीप वर्णन खंड, मानसरोदक खंड, सुआ खंड, सात समुन्द्र खंड, सिंहलद्वीप खंड, बसंत खंड, शटऋतु वर्णन आदि खंडो में प्रकृति ने अपनी छटा बिखेरी हैं जिससे प्रतीत होता है कि मनुष्य ने अपने जीवन में प्रकृति के साथ अपना गहरा तादात्म्य बिठाते हुए प्रकृति को महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया है। चाहे मनुष्य कितना भी अत्याधुनिक क्यों ना हो जाये परन्तु प्रकृति, वातावरण, पर्यावरण से अपने को दूर नहीं कर सकता। ऐसा ही प्राकृतिक तादात्म्य जायसी ने अपने पदमावत देने को प्रयत्न किया जिन्हें हमें गम्भीरता से अध्ययन करते हुए विश्लेषणात्मक स्वरूप में रखना है।

प्रेम और सौन्दर्य का अलंकृत चित्रण जायसी की प्रमुख कल्पना है, इस अलंकरण में कवि ने प्रकृति के विविध उपादानों का उपयोग करते हुए काव्य को महाकाव्य तक की यात्रा से जोड़ा है। जायसी ने आध्यात्मिक व्यंजना को प्रेम संयोग व वियोग से जोड़ा है जिसमें प्रकृति का विशेष चित्रण है। जायसी ने अपने काव्य में प्रकृति का अनुपम चित्रण अलंकरण, वातावरण सृष्टि, आध्यात्मिक अभिव्यक्ति, ईश्वरीय वैभव, उपदेश, नीति, मानवीकरण उद्दीपन आदि रूपो में किया है। इसी प्रकृति चित्रण को विस्तार से इन्हीं बिन्दुओ के अन्तगत स्पष्ट किया जा सकता है।

प्रकृति का सर्वाधिक उपयोग कवि जायसी ने पद्मावत में अलंकरण रूप में करने का प्रयास किया है। प्रकृति के बाह्य सौन्दर्य से लेकर हृदय की आंतरिक भावनाओ को प्रस्तुत करने में उन्होनें प्राकृतिक उपादानों, व्यापारों को अलंकरण रूप के नख–शिख वर्णन, मानवीय भावनाओं, वस्तु व्यापार आदि स्वरूपों में देने का सरलतम प्रयास किया है। जब कोई कवि किसी नायिका के रूप स्वरूप की चर्चा करता है तो निश्चय ही वह प्रकृति को उपादान बनाता है तथा प्रकृति का चुनाव तय करते हुए उपमान तय करता है। प्रकृति से जुड़ा कुछ ऐसा ही अनुपम उदाहरण इन पंक्तियों में है–

"सहस किरन जो सुरूज दिपाई। देखि लिलार सोउ छवि जाई।।
कंचन रेख कसौटी कसी। जनु घन महं दामिनी परगसी।।
फूल दुपहरी जानौं राता। फूल झरहिं ज्यों–ज्यों कहं बाता।।